वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्व-विद्यालय, जौनपुर

शोध केन्द्र

काशी नरेश राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, ज्ञानपुर, संत रविदास नगर–भदोही, उ0प्र0

प्रमाण–पत्र

मैं प्रमाणित करता हूँ कि राजेश कुमार पाण्डेय, दर्शन शास्त्र में काशी नरेश राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, ज्ञानपुर, संत रविदास नगर-भदोही से शोध विषय *"सांख्य और अद्वैत वेदान्त में मोक्ष की अवधारणा का तुलनात्मक विवेचन"* पर निर्धारित समय सीमा में अपना शोध कार्य सम्पन्न किया। यह शोध प्रबन्ध इनके शोध काल में किये गये विशिष्ट अध्ययन एवं अन्वेषण का परिणाम है। जहाँ तक मुझे ज्ञात है किसी अन्य उपाधि के लिए इसका उपयोग नहीं हुआ है।

प्रो0 अशोक मिश्र
प्राचार्य
का0न0रा0स्ना0 महाविद्यालय,
ज्ञानपुर, सं0र0न0–भदोही

डा0 बी0 पाण्डेय
(विभागाध्यक्ष दर्शनशास्त्र)
शोध निर्देशक
का0न0रा0स्ना0 महाविद्यालय,
ज्ञानपुर, सं0र0न0–भदोही

प्रस्तुत अमूल्य
निधि परम पूज्य पिता
श्री कमला प्रसाद पाण्डेय
एवं परम पूज्यनीया माता
श्रीमती अमृता देवी के
कमलवत् चरणों में समर्पित

समर्पण

अक्षुण्य प्रेरणा द्वारा संपादित यह शोध प्रबन्ध उन्हें ही समर्पित है, जिनका अगाध एवं अक्षय मनोबल सदैव ही मेरे साथ रहा है। अपने अकथनीय व अप्रतिम योगदान से जिन्होनें मुझे इस कार्य हेतु सदैव प्रेरित किया, ऐसे परम् पूज्यनीय गुरू डा० बी० पाण्डेय (विभागाध्यक्ष दर्शनशास्त्र, का०न०रा०स्ना० महाविद्यालय, ज्ञानपुर, सन्त रविदास नगर भदोही) जी को अनन्त सद्भावों सहित यह अमूल्य निधि उनके कमलवत् चरणों में सर्मपित कर रहा हूँ।

आभार प्रकाश

अब मैं शोध प्रबन्ध की पूर्णता में सतत् प्रयत्नशील एवं महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले महानुभावों के प्रति हृदय से आभार व्यक्त करना अपना कर्तव्य समझता हूँ। इस क्रम में सर्वप्रथम अपने निर्देशक डा0 बी0 पाण्डेय (रीडर एवं विभागाध्यक्ष, दर्शनशास्त्र विभाग, काशी नरेश राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, ज्ञानपुर, संत रविदास नगर–भदोही) की विशेष रूप से आभारी हूँ। वास्तव में यह उनके निरन्तर प्रेरणा एवं उत्साह का फल है जो इस कार्य को सम्पन्न करने में लेखक समर्थ हुआ। जिनके उपयोगी सुझाव, कुशल मार्गदर्शन एवं स्नेहपूर्ण आलोचनाओं द्वारा अस्पष्ट और दुर्ज्ञेय यह विषयवस्तु अत्यधिक सुस्पष्ट और सुज्ञेय हो सकी है।

महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो0 अशोक मिश्र के प्रतिभा में हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ क्योंकि उन्होने इस कार्य के सम्पादन में मुझे समय समय पर प्रेरित किया। अन्य महानुभावों जिनसे मुझे उक्त शोध कार्य करने की प्रेरणा मिली है, उनमें मुख्य है डा0 विजयकान्त दूबे (रीडर, दर्शनशास्त्र विभाग, का0न0रा0स्ना0 महाविद्यालय, ज्ञानपुर, सं.र.न.–भदोही), डा0 कैलाशनाथ त्रिगुनायत (दर्शनशास्त्र विभाग), डा0 किशोरीलाल पाण्डेय (प्रवक्ता, दर्शनशास्त्र विभाग), डा0 सविता भारद्वाज (प्रवक्ता, दर्शनशास्त्र विभाग) आप सबके प्रति मै हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ। क्योंकि आप सबका आर्शीवाद इस कार्य को सम्पादित करने का महत्वपूर्ण आधार रहा है।

प्रस्तुत शोध कार्य के सम्पादन में मेरे परिवार के समस्त सदस्यों का किसी न किसी रूप में सहयोग रहा है। पूज्य पिता श्री कमला प्रसाद पाण्डेय (भूतपूर्व प्राचार्य, इण्टरमीडिएट कालेज, दुर्गागंज) व माता श्रीमती अमृता देवी तथा

नाना स्वं0 श्री राजनारायण तिवारी. श्री केवला शंकर तिवारी की प्रेरणा से ही मैंने शोध हेतु पंजीकरण कराया था। आज मै उनके प्रति श्रद्धा सुमन अर्पित करता हूँ। बड़े पिताजी श्री हृदय नारायण पाण्डेय, श्री शीतला प्रसाद पाण्डेय एवं चाचा डा0 अम्बिका प्रसाद पाण्डेय के प्रति भी हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ, क्योंकि आप सबके आर्शीवाद के बिना यह कार्य सम्पादित करना मेरे लिए सम्भव न हो पाता। परिवार के अन्य सदस्यों में बड़े भाई श्री संगमलाल पाण्डेय, अच्छेलाल पाण्डेय, अशोक कुमार पाण्डेय और आलोक कुमार पाण्डेय एवं भाभी कुसुमदेवी, मन्जू पाण्डेय (स्नातक)., उषा देवी और इनके पिता बटेश्वर नाथ त्रिपाठी एडवोकेट सेमुही जौनपुर सरोजा देवी, बहन उर्मिला मिश्रा (प्राधानाध्यापिका, नौडेरा, सुवंसा, प्रतापगढ़). उचित न होगा

यदि इस कृतज्ञता ज्ञापन की श्रृंखला में अपनी अर्द्धांगिनी श्रीमती बबिता पाण्डेय (एम.ए.प्रथम वर्ष दर्शनशास्त्र) का आभार व्यक्त न करूँ, जो इस कृतत्व की पूर्णता के लिए प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष प्रेरणास्रोत एवं सम्बल रही, कदाचित अध्ययन के निर्विवाद कालखण्ड में यह विनम्र प्रयास पूर्ण हुआ इस अवसर पर श्रीमती पाण्डेय का पूर्ण अधिकार है। इनके पिता श्री सुबेदार तिवारी तथा इनकी माता श्रीमती धर्मशीला देवी इनके पुत्र रितेश कुमार तिवारी के प्रति भी मै कृतज्ञ हूँ, क्योंकि समय–समय पर आप सभी ने मुझे प्रेरित किया है। साथ ही साथ मै अपने जीजा राकेश कुमार मिश्र, जिनके प्रेरणा से मुझे हमेशा आंतरिक शक्ति मिलती रही। मूल प्रेरणा मुझे अपने पिता श्री कमलाप्रसाद पाण्डेय एवं कमला प्रसाद मिश्र (प्रधानाध्यपक) नौड़ेरा सुवन्साप्रतापगढ़. से प्राप्त हुई। उनका मैं हृदय से नमन करता हूँ। अन्य सुहृदयजन जिनके आर्शीवाद एवं सहयोग से उक्त कार्य सम्पादित हुआ उनमें मुख्य है डा0 सीताराम शुक्ला

(अध्यक्ष ज्ञानपुर केमिस्ट एंड ड्रगिस्ट) उमरिया ज्ञानपुर. डा. प्रमोद कुमार पाण्डेय (विभागाध्यक्ष) दर्शन शास्त्र सार्वजनिक महाविद्यालय बादशाहपुर. डा. विपिन कुमार पाण्डेय (विभागाध्यक्ष जगद्गुरू रामभद्राचार्य विकलांग विश्वविद्यालय चित्रकुट, उ.प्र.). शशीकान्त मिश्र (सांस्कृतिक मंत्री काशी नरेश ज्ञानपुर), डा. बिन्द्रा श्रीवास्तव (दर्शनशास्त्र), डा. सरिता गुप्ता (स्त्री रोग विशेषज्ञ राजनर्सिग होम भदोही), डा0 प्रेंमशंकर (डी0एम0एल0टी0, शशिपैथोलॉजी, ज्ञानपुर, भदोही), कमलेश कुमार बिन्द (ग्रामपंचायत विकास अधिकारी कसियापुर), डा. जय प्रकाश पाण्डेय (प्रवक्ता दर्शनशास्त्र, विकलांग विश्वविद्यालय चित्रकूट), पितातुल्य श्री चन्द्रमणि दूबे (पूर्व प्रधान सन् 1982वारी भदोही), आदित्य नारायण पाण्डेय (लेखाधिकारी, भोरी भदोही), अशोक कुमार मिश्र (एडवोकेट), रंगनाथ दूबे (ग्राम विकास अधिकारी) वारी भदोही, पिता श्री लालमणि दूबे तथा माता श्रीमती शारदा देवी), श्री लालजी दूबे, श्री धर्मराज तिवारी मास्टर बिहियापुर सुँरियांवा उपेन्द्र नाथ शुक्ल पूर्व महामंत्री छात्र संघ ज्ञानपुर, एवं भोला नाथ तिवारी के प्रति भी इस अवसर पर कृतज्ञता तथा स्नेह ज्ञापित करता हूँ क्योंकि आप सभी ने समय–समय पर उक्त कार्य के सम्पादन हेतु मुझे प्रेरित किया।

आज मैं अपने मित्रों के सहयोग एवं प्रेरणा को विस्मृत नहीं कर पा रहा हूँ उन मित्रों में नवनीत मिश्र एम.काम. छतमा भदोही, तुंगनाथ दूबे एम.ए. दर्शन, संजय तिवारी एवं सुधेश कुमार पाण्डेय का नाम विशेष महत्वपूर्ण है। आप सबके प्रति मैं कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ।

इस शोधग्रन्थ के त्रुटि रहित भाषा एवं पृष्ठों की साज–सज्जा में कम्प्यूटर प्रिंटिंग का एक मात्र श्रेय एस0राम0 कम्प्यूटर, गांधी आश्रम गली, ज्ञानपुर, संत रविदास नगर भदोही के डायरेक्टर श्री विनय कुमार दूबे जी एवं

आपरेटर उमेशचन्द्र पाण्डेय का है। मैं इनके प्रति हृदय से आभार प्रकट करता हूँ, जिन्होंने अपने अथक परिश्रम से कम्प्यूटर प्रिंटिंग का कार्य बड़ी ही कुशलता से सम्पन्न किया।

ऐसे शुभ अवसर पर निर्देशक डा0 बी पाण्डेय का मैं पुनः आभारी हूँ जिनके आर्शीवाद से यह दुर्लभ कार्य सम्भव हो सका है।

राजेश कुमार पाण्डेय,

(राजेश कुमार पाण्डेय)
शोध छात्र
दर्शनशास्त्र विभाग
काशी नरेश राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
ज्ञानपुर, सन्त रविदास नगर भदोही

प्रस्तावना

भारतीय चिन्तन परम्परा में मानव जीवन के उद्देश्य के रूप में पुरूषार्थ को स्वीकार किया जाता है। पुरूषार्थ ही जीवन का अर्थ है, लक्ष्य है। पुरूषार्थ की प्राप्ति के लिए जीवनयापन की पद्धति को ही धर्म की संज्ञा दी जाती है। इसप्रकार मानवजीवन का धर्म पुरूषार्थ ही है। धर्म, अर्थ, काम एवं मोक्ष नामक चार पुरूषार्थ में सभी पुरूषार्थ समय–समय पर जीवन का अंतिम पुरूषार्थ मोक्ष है और यही हमारे शोध प्रबन्ध का प्रतिपाद्य विषय है। भारतीय चिन्तन में प्रायः सभी दार्शनिकों ने मोक्ष को ही अंतिम लक्ष्य के रूप में स्वीकार किया है। किन्तु विचारकों की दृष्टि में मोक्ष का स्वरूप भिन्न–भिन्न है। मोक्ष का यथार्थ स्वरूप क्या है? यह आज भी अनुसंधान का विषय बना हुआ है। क्योंकि मोक्ष का स्वरूप मोक्ष प्राप्त व्यक्ति ही प्रमाणित कर सकता है। जिसने मोक्ष प्राप्त कर लिया है वह लौट कर यह नहीं बताता कि मोक्ष क्या है? कैसा है? आदि।

भारतीय चिन्तन में इसीलिए मोक्ष के विभिन्न विचारकों ने विभिन्न रूपों में प्रमाणिमत किया है। इसलिए मोक्ष के यथार्थ स्वरूप का अनुसंधान नितांत आवश्यक है। कही कही सम्प्रदायों में मोक्ष सम्बधी भ्रान्त धारणायें प्रचलित है। किन्तु उन भ्रान्त धारणाओं के समापन के लिए मोक्ष तत्व का गहन तात्विक अध्ययन आवश्यक हो जाता है। इसी उद्देश्य से प्रस्तुत शोध में सांख्य एवं अद्वैत वेदान्त दर्शन में विद्यमान मोक्ष सम्बन्धित धारणा का तुलनात्मक विवेचन किया गया है। क्योंकि सांख्य और अद्वैत वेदान्त परस्पर विपरीत मतवादों का प्रतिपादन करते है। सांख्य प्रकृति एवं पुरूष नामक दो तत्वों को स्वीकार करने के कारण द्वैतवादी दर्शन है तथा अद्वैतवादी दर्शन एक ही तत्व ब्रम्ह को ही स्वीकार करने के कारण एकतत्ववादी दर्शन है। जहॉ तक सांख्य की मोक्ष

सम्बन्धी अवधारणा उसके द्वैतवाद पर आधारित है, तात्विक रूप से दोनों मतवाद परस्पर विपरीत मान्यताओं पर आधारित है। इसलिए इनके मोक्ष सम्बन्धी सिद्धान्त में भी भिन्नता है। इसी भिन्नता के कारण दोनों ही सिद्धान्तों का तुलनात्मक विवेचन के द्वारा दो परस्पर विपरीत धारणाओं में विद्यमान यथार्थ तत्व का बोध होगा तथा उसी आधार पर दार्शनिक जगत में विद्यमान मोक्ष सम्बन्धी भ्रान्त धारणाओं का समापन भी होगा। इसी उद्देश की पूर्ति के शोधार्थी ने प्रस्तुत शोष में सांख्य एवं वेदान्त के मोक्ष सिद्धान्त का तुलनात्मक विवेचन प्रस्तुत किया है।

मोक्ष की अवधारणा की सम्यक विवेचन के लिए जीव के स्वरूप एवं बन्धन के व्याख्या भी आवश्यक हो जाती है क्योंकि बन्धन का निवारण ही मोक्ष है। अतः यह बन्धन क्या हैं? क्यों हैं? इसका निवारण कैस सम्भव है यह भी दार्शनिक विवेचन का महत्वपूर्ण विषय है बन्धन के स्वरूप की व्याख्या विभिन्न दार्शनिको ने विभिन्न रूपों में की है। आस्तिक दर्शनों के अतिरिक्त नास्तिक दर्शनों ने भी बुद्ध जैन ने बन्धन को जन्म और मरण के रूप में स्वीकार किया तथा यह प्रमाणित किया कि जीवन कष्टमय हैं दुःख ही जीवन का मूल तत्व है। जिसकी निवृत्ति ही निवारण है।

आचार्य शंकर ने बन्धन को माया के रूप में प्रमाणित किया हैं माया के आवरण के ही कारण जीव अपने मौलिक स्वरूप को विस्तृत कर जाता है। उसे यह बोध नही होता कि वह ब्रह्म का ही स्वरूप है। अर्थात अपने निज स्वरूप का बोधन ही बंधन है। जिसके लिए आचार्य शंकर ने माया शक्ति की सत्ता को स्वीकार किया यह माया अविद्या या अविज्ञान का सृजन करते हुए जीवन को भ्रमित करती है। इसी माया के ही कारण जीव अपने मौलिक स्वरूप

को विस्तृत कर अज्ञान में सयन करता है। इसीलिए शंकर ने माया एवं तत् जीवित अविद्या को ही बन्धन के कारण के रूप में प्रमाणित किया।उक्त के तथ्य के विवेचन से यह प्रमाणित होता है कि भारतीय चिंतन की परम्परा में विभिन्न दार्शनिको ने विभिन्न रूपों में बन्धन की अवधारणा को प्रमाणित किया है। लोगों की दृष्टियों में बन्धन का स्वरूप भिन्न–भिन्न है। इसी कारण मोक्ष की व्याख्या भी भिन्न ही है। बन्धन का यथार्थ स्वरूप क्या हैं? मोक्ष की अवधारणा क्या हैं? इसका यथार्थ विवेचन नितान्त आवश्यक है, क्योंकि दार्शनिक जगत में इस सम्बन्ध में विभिन्न प्रकार की भ्रान्त धारणाये विद्यमान है। उन समस्त भ्रान्त धारणाओं का निराकरण आवश्यक है। तथा प्रस्तुत शोध का यही एक मात्र उद्देश्य भी है। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए समस्त आस्तिक चिंतको के दार्शनिक सिद्धान्तो का संक्षिप्त विवेचन यहॉ प्रासंगिक भी है। इसलिए शोधार्थी ने प्रस्तुत शोध प्रबन्ध में संख्या और वेदान्त के अतिरिक्त योग न्याय वैशेषिक, मीमांसा में भी बन्धन एवं मोक्ष सम्बन्धी अवधारणाओं का विवेचन किया हैं यद्यपि शोधार्थी का मुख्य उद्देश्य सांख्य एवं अद्वैत वेदान्त दर्शन का तुलनात्मक विवेचन ही है। किन्तु इस तुलनात्मक विवेचन के लिए अन्य दार्शनिक सिद्धान्तो का भी संक्षिप्त विवेचन यहॉ प्रासंगिक है। प्रस्तुत शोध में शोधार्थी ने तुलनात्मक विवेचन के पूर्व–पतंजलि गौतम, कणादि जैसे उत्कृष्ट भारतीय चिन्तको की मौलिक धारणाओं का विवेचन मात्र इसी आशय से किया है। ताकि बन्धन और मोक्ष के सम्बन्ध में भारतीय चिन्तन में विद्यमान समस्त धारणाओं का पूर्णतयाः समापन हो सके। यद्यपि सभी चिन्तको ने मोक्ष को ही जीवन के अन्तिम रूप में प्रस्तावित किया है। परन्तु उस अन्तिम लक्ष्य का स्वरूप यदि विभिन्न चिन्तको की दृष्टि में भिन्न–भिन्न है तो यह दार्शनिक समस्या बन जाती है कि मोक्ष का

यथार्थ स्वरूप क्या है? इसे प्राप्त करना जीवन का अन्तिम पुरुषार्थ क्यों हैं? उक्त समस्याओं को दृष्टिगत रखते हुए शोधार्थी ने यह प्रयास किया है कि अनुसंधान के माध्यम से वह मोक्ष का यथार्थ स्वरूप स्पष्ट कर सके। यद्यपि तात्विक दृष्टि से मोक्ष के यथार्थ स्वरूप की व्याख्या संभव नहीं है क्योंकि मोक्ष अनुभूति का विषय नहीं है। मोक्ष प्राप्त व्यक्ति यह बताने में सक्षम नहीं होता कि मोक्ष कैसा है? स्वामी रामकृष्ण परमहंस की भाषा में यह वैसा ही है जैसे एक नमक के टुकड़े को सागर इसलिए छोड़ दिया जाये कि वह लौटकर सागर की गहराई बतायेगा किन्तु यह नमक का टुकड़ा ऐसा नहीं कर पाता। सागर के नमकीन जल में स्वरूप को विलीन करते हुए एकाकार हो जाता है। सागर से उसका पृथक अस्तित्व नही होता है कि वह बता सकें कि सागर की गहराई क्या हैं? इस प्रकार मुक्त पुरुष मोक्ष की स्वरूप की व्याख्या नही कर पाता वह ब्रह्म के आनन्द तत्व में विलीन हो जाता है। क्योंकि अज्ञान का यदि आवरण नहीं है तो पृथक तत्व का प्रश्न ही उपस्थित होता। इसी को आचार्य शंकर ने जीव एवं ब्रह्म की एकाकारता की संज्ञा की हैं सच्चे अर्थ में यही निर्वाण या मोक्ष है।

किसी भ्रान्त धारणा के निवारण के लिए तुलनात्मक विवेचन आवश्यक है तुलनात्मक विवेचन से ही यथार्थ स्वरूप का बोध होता है। क्योंकि दो भिन्न–भिन्न सिद्धान्तों का प्रतिपादन करते है। सांख्य दर्शन प्रकृति एवं पुरुष के संयोग को ही जीवन एवं सृष्टि का आधार मानता है। इसके दृष्टि में प्रकृति की साम्या वस्था ही मोक्ष है। इसके विपरित आचार्य शंकर ने ब्रह्मतत्व प्राप्ति को मोक्ष के रूप में प्रमाणित किया है। तथा यह भी स्वीकार किया हैं। ब्रह्मज्ञान के बिना ब्रह्म तत्व की प्राप्ति नहीं हो पाती।

ब्रह्म वेद ब्रह्मैस्व भवति– अर्थात ब्रह्म को ही जानने वाला ब्रह्म हो जाता है। ब्रह्म अपने आप में सत्चित एवं अनन्त है। अतः ब्रह्म को पाप्त करना यदि मोक्ष है तो ब्रह्म यदि आनन्द स्वरूप है तो मोक्ष का लक्ष्य आनन्द ही होगा। वेदान्त दर्शन आनन्द को ही मोक्ष मानता है। और यह आनन्द ब्रह्म ज्ञान का ही परिणाम है। इसी प्रकार अवधारणाओं को संत तुलसी ने भी यह स्वीकार करते हुए कहा है कि–

'जानत तुमहि तुमहि होई जाई'

अर्थात् परमात्मा को जान लेने के पश्चात ही ब्रह्म तत्व की प्राप्ति हो पाती है। इस कथन का तात्पर्य यह है कि मोक्ष की धारणा में ब्रह्म एवं जीव का अभेद सम्बन्ध स्थापित हो जाता है। ब्रह्म के आनन्द स्वरूप की अनभूति ही जीव को होने लगती है। इस प्रकार यह प्रमाणित होता है कि मोक्ष आनन्द स्वरूप है। इसके बौद्ध दर्शन दुःख निवृत्ति की संज्ञा दी जाती है।

प्रस्तुत शोध में शोधार्थी ने सांख्य एवं अद्वैत वेदान्त दर्शन के तुलनात्मक विवेचन के आधार पर मोक्ष के स्वरूप को प्रमाणित करने का प्रयास किया है। मोक्ष का यथार्थ स्वरूप क्या है? यथार्थ स्वरूप के शोध के अभाव में ही विभिन्न विचारको ने मोक्ष की अवधारणा को विभिन्न रूपों में स्वीकार तथा उसे विभिन्न रूपों मे प्रमाणित भी किया है। दार्शनिक दृष्टि से मोक्ष दुःख निवृत्ति रूप में मान्यता प्राप्त है। यह दुःख निवृत्ति की आनन्द की प्राप्ति है। इसेक द्वारा ही लौकिक जगत के समस्त दुःखों से निवृत्ति सम्भव है। चूँकि जन्म मृत्यु एवं जीवन दुःख मय है। इसलिए बुद्ध ने दुःख निवृत्ति को ही निर्माण के रूप में स्वीकार किया हैं आचार्य शंकर ने अविद्या या माया को समाप्ति को मोक्ष माना है क्योंकि जीवन अविद्या का ही प्रमाण है। जबतक माया है तभी तक जीवन है।

इसलिए परमतत्व आनन्द के प्राप्ति के लिये ज्ञान की प्राप्ति है ज्ञान नितान्त आवश्यक है और यह ज्ञान ही मोक्ष का मार्ग प्रशस्त करता है तथा जीव किसी प्रकार के विभेद की अनुभूति नहीं करता इस प्रकार आचार्य शंकर के अनुसार ब्रह्म और जीव की एकाकार्ता ही मोक्ष है।

प्रस्तुत शोध में सांख्य एवं वेदान्त दर्शन में विद्यमान मोक्ष के अवधारणा के तुलनात्मक विवेचन के आधारपर शोधार्थी ने मोक्ष के यथार्थ स्वरूप को प्रमाणित करने का प्रयास किया है। दार्शनिक जगत में यह प्रयास अपने आप में एक नवीन प्रयास है, इसमें सन्देह नहीं।